अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रोज़गार के अवसर

— डॉ. संजय तिवारी

पिछले दो दशकों के दौरान विश्व में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यवहारों, प्रक्रियाओं और पद्धतियों में व्यापक बदलाव आया है। उदारीकरण ने बाज़ार में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नए क्षितिजों को खोला है और विविध प्रकार के उत्पादों के लिए विदेशी बाज़ारों का मार्ग प्रशस्त किया है। हालांकि, भारत का विदेश व्यापार कुल विश्व व्यापार का करीब 1% है, लेकिन मात्रा और विविधता की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। 1991 में जब नई आर्थिक नीति लागू की गई थी, भारत का निर्यात मात्र 18 अरब अमरीकी डॉलर था, जो अब बढ़कर वर्ष 2009 में लगभग 200 अरब अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया है। एक अनुमान के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद का 45% निर्यात एवं आयात के कारण है। वस्तुओं और सेवा ट्रेड में 2003 में भारत का कुल हिस्सा 0.92% था जो कि 2008 में बढ़कर 1.64% तक पहुंच गया। एक अध्ययन के अनुसार पिछले पांच वर्षों में (अर्थात 2003 से 2008 तक) निर्यात में वृद्धि के परिणामस्वरूप करीब एक करोड़ 40 लाख रोज़गार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सृजित हुए हैं। एक्ज़िम (निर्यात-आयात) नीति ने भी 15% निर्यात वृद्धि के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा वर्तमान 1% से बढ़कर 1.5% हो गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सरकार ने विदेश व्यापार नीति को सुदृढ़ किया है तथा निर्यात संसाधन क्षेत्रों (ईपीजेड), विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) की स्थापना की है और निर्यात- आयात की सुविधा के लिए ड्राई पोर्ट्स खोलने के साथ-साथ शुल्क में छूट तथा अन्य उपाय किए हैं। अतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भारत में रोज़गार तथा उद्यमशीलता के व्यापक अवसर मौजूद हैं।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आयाम

व्यापक अर्थों में अंतर्राष्ट्रीय बिजनेस के क्षेत्र में किसी देश द्वारा विभिन्न व्यापार साझेदारों/देशों की निर्यात और आयात प्रक्रियाओं को एकजुट करते हुए अपने विदेश व्यापार के लक्ष्यों को हासिल करना होता है। 1999 में डब्ल्यूटीओ (विश्व व्यापार संगठन) के अस्तित्व में आने के बाद अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पद्धतियों का मानकीकरण हुआ है तथा सदस्य देश कुछ संयुक्त नियमों तथा आचरण संहिताओं के साथ एक व्यापक नेटवर्क के अंतर्गत आने के लिए सहमत हुए हैं। हालांकि, कुछ मुद्दों को लेकर बाधाएं तथा असहमतियां हैं, लेकिन विश्व व्यापार में सामंजस्य लाने में इस संगठन के योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। चूंकि जटिल व्यापारिक गतिविधियों में विभिन्न साझेदार/देश शामिल हैं। इसलिए संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान बहुत-सी पेंचिदगियां उत्पन्न होती रहती हैं। ऐसा निर्यात-आयात नीतियों, कानूनों, सीमा शुल्क समझौतों, प्रलेखन अपेक्षाओं, गुणवत्ता नियंत्रण की चिन्ताओं, मानकीकरण और अन्य आर्थिक माइक्रो/मैक्रो विचारों पर मतभेद के कारण हो सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बिज़नेस प्रक्रियाओं में उत्पादन, इन्वॉयसिंग, पैकिंग, बीमा, परिवहन एवं नौवहन, संभार तंत्र, गुणवत्ता नियंत्रण, निरीक्षण, वित्त, प्रलेखन, विपणन, निर्यात, आयात, कस्टम क्लीयरेंस, विधेयन, जोखिम मूल्यांकन, सर्वेक्षण, सेवा, संपर्क, विदेशी मुद्रा प्रबंधन, मर्चेन्डाइजिंग, कराधान, अनुसंधान एवं विकास आदि क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और व्यवसाय में संलग्न बहुर्राष्ट्रीय कंपनियों में मानव संसाधन प्रबंधन में पेशेवरों की प्रत्यक्ष भूमिका होती है। इनमें पारगामी सांस्कृतिक अनुसंधान पद्धतियां तथा पारगामी सांस्कृतिक विचार-विमर्श और सम्प्रेषण, विदेशी मुद्रा बाज़ारों तथा अन्य कार्यों के साथ-साथ वित्त एवं अवसंरचना व्यवस्था शामिल हैं, जिसके अन्तर्गत निर्यात प्रोत्साहन परिषदों और वस्तु बोर्डों, राज्य व्यापार निगमों, निर्यात संसाधन क्षेत्रों, क्षेत्रीय व्यापार खण्डों, बहुराष्ट्रीय और द्विपक्षीय व्यापार समझौते और ई-कॉमर्स से जुड़ी गतिविधियां आती हैं। इनसे अंतर्राष्ट्रीय बिज़नेस की संभावनाओं में वृद्धि होती है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में रोज़गार की प्रकृति एवं संभावना

ऊपर वर्णित आयामों को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेषज्ञों की ऐसे संगठनों में आवश्यकता होती है जो कि निर्यात-आयात गतिविधियों में संलग्न हैं। इनमें मुख्यतः निर्यात घराने, व्यापारिक घराने, कस्टम क्लीयरेंस हाउसेस, विशेष आर्थिक क्षेत्र, ड्राईपोर्ट्स, बंदरगाह, लॉजिस्टिक्स कम्पनियां, परिवहन कम्पनियां, राज्य व्यापार निगम, समुद्री बीमा कम्पनियां, जहाजरानी कम्पनियां/निगम, विदेश व्यापार महानिदेशालय, निर्यात-आयात वित्त एवं विदेशी मुद्रा सेवाएं उपलब्ध कराने वाले बैंक तथा वित्तीय संस्थान, प्री-शिपमेंट तथा पोस्ट-शिपमेंट गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाएं, निर्यात विपणन फर्में, निर्यात आयात व्यवसाय में संलग्न बीपीओ, ग्राहक संबंध प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय वित्त, अंतर्राष्ट्रीय अकाउंटिंग और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंध से जुड़ी संस्थाएं शामिल हैं।

इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट अपनी तरह का एक ऐसा महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय और अन्तर्देशीय कारपोरेशनों में रोज़गार प्राप्ति की व्यापक संभावनाएं हैं। पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत उम्मीदवार ऐसी निर्यात कम्पनियों, सार्वजनिक क्षेत्र के घरानों, अंतर्राष्ट्रीय बैंकों और कम्पनियों में रोज़गार की तलाश कर सकते हैं जिनकी अन्य देशों में भी सहायक कम्पनियां हैं। ज़्यादातर कम्पनियां आकर्षक वेतन पैकेज के साथ-साथ अन्य सुविधाओं का प्रस्ताव करती हैं। इंटरनेशनल बिज़नेस में मास्टर्स डिग्री/डिप्लोमा पूरा करने के उपरांत कोई व्यक्ति निर्यात घरानों या व्यापारिक घरानों में नियुक्त किया जा सकता है। इस क्षेत्र से जुड़े व्यावसायिकों के दायित्वों में निर्यात/आयात में संबंधित प्रलेखन के साथ-साथ कर एवं सीमा शुल्क प्राधिकारियों के साथ संपर्क करना सम्मिलित है। उनके कार्यों में निर्यातकों तथा बंदरगाह अधिकारियों के बीच संपर्क रखना भी शामिल है। कस्टम क्लीयरेंस में सहयोग के लिए निर्यातकों को सीएचए (कस्टम हाउस एजेंट्स) की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, बीमा कंपनियों में, विशेषकर समुद्री बीमा कम्पनियों में निर्यात प्रबंधकों तथा एग्जीक्यूटिव की बहुत ज्यादा मांग होती है, जहां उन्हें देश में जहाजों में भेजे गए सामान को होने वाले भौतिक नुकसान या अन्य प्रकार की हानि के मूल्यांकन का काम करना होता है। उन्हें निर्धारक, सर्वेक्षक और प्रमाणक की ज़िम्मेदारियां दी जाती हैं। यह एक बहुत ही तकनीकी एवं विशिष्ट कार्य है जिसके लिए न केवल व्यावसायिक सक्षमता की आवश्यकता होती है बल्कि स्थितियों के अनुरूप कार्य संचालन हेतु अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों तथा कानूनों की जानकारी होना भी अपेक्षित होता है।

विपणन के क्षेत्र में इंटरनेशनल बिजनेस में विशेषज्ञता के साथ प्रबंधन स्नातकों के लिए व्यापक संभावनाएं है। निर्यात घरानों को समुद्रपारीय सेल्स, विदेश में नए व्यापारिक क्षेत्रों तथा बाज़ारों की तलाश के लिए विपणन व्यावसायिकों की ज़रूरत होती है। इसके लिए अनिवार्य योग्यताओं में इंटरनेशनल बिज़नेस में स्नातकोत्तर डिग्री है और साथ में वैश्विक व्यवसाय वातावरण की समझ के साथ चुनौतियों को संभालने की अभिरुचि होनी चाहिए। इन व्यावसायिकों के लिए विदेशी भाषा का ज्ञान होना अतिरिक्त लाभप्रद साबित होता है। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय विपणन, कार्यकारी बाजार अनुसंधान पर आधारित रणनीतियों का सुझाव देते हैं तथा विदेश में मांग और संभावित खरीदारों के बारे में अनुमान लगाते हैं। उन्हें ग्राहक संबंध प्रबंधन (सीआरएम) कार्यों में भी संलग्न किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार व्यावसायिकों के लिए कंसलटेंसी भी एक सर्वाधिक आकर्षक और उच्च पारिश्रमिक वाला क्षेत्र है। एक इंटरनेशनल बिज़नेस कंसलटेंट पर अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों के लिए बिजनेस डेवलपमेंट और बाज़ार सूचना के विभिन्न पहलुओं के बारे में संगत और अद्यतन सूचनाएं उपलब्ध कराने का दायित्व होता है।

इंटरनेशनल बिज़नेस कंसलटेंट विदेश में व्यावसायिक निवेश, अवसरों, प्रतिस्पर्द्धी कम्पनियों और यहां तक कि व्यावसायिक पद्धतियों तथा दूसरे देश में कारोबार करने से जुड़े कानूनी प्रभावों के बारे में सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। इंटरनेशनल बिजनेस कंसलटेंट्स उन कंपनियों के लिए कार्य करते हैं जो पहले से अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में कार्यरत हैं या ऐसी कम्पनियां जो कि अंतर्राष्ट्रीय विस्तार या निवेश की योजनाएं बना रही होती हैं। अनुसंधान पर आधारित जोखिम विश्लेषण और व्यावसायिक विश्लेषण भी इंटरनेशनल बिजनेस कंसलटेंट के दायित्वों का हिस्सा है।

यदि कोई व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानूनों, समझौतों की अच्छी जानकारी रखता है और उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़े शोध कार्यों में निपुणता प्राप्त है तो निश्चित तौर पर उसे विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) विश्व बैंक, अंकटाड, क्षेत्रीय व्यापार प्रखण्डों और ट्रेड संघों में उपयुक्त रोज़गार प्राप्त हो सकता है। आयातकों और निर्यातकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं के व्यापार में विशेषज्ञों की भी जरूरत होती है। विभिन्न देशों के बीच कानूनी विवादों के समाधान के लिए पेटेंट्स विशिष्ट उत्पाद और सेवा श्रेणियों आदि के संबंध में, जो कि भौगोलिक स्थानों, बहुराष्ट्रीय और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों, सीमा शुल्क और अन्य शुल्कों से जुड़ी होती हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विवादों के दृष्टिगत कानूनी अभिरुचि रखने वाले व्यक्तियों की बहुत मांग है।

इस क्षेत्र में प्रवेश के वास्ते विधि में योग्यता के साथ इंटरनेशनल बिजनेस में डिग्री पर्याप्त होती है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वित्त संबंधी मामलों की देखरेख के लिए भी विशेषज्ञों की भारी मांग है और इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय वित्त एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आया है।

इंटरनेशनल बिज़नेस प्रबंधन में विशेषज्ञों की बढ़ती मांग के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय बिजनेस प्रबंध संस्थानों में भी संकाय सदस्यों की भारी मांग है। यदि इंटरनेशनल बिजनेस में आपको अपने ज्ञान को अद्यतन, विश्लेषण, त्वरित, विस्तार करने की चाह है तो आपके लिए शिक्षण और शोध व्यवसाय में काफी अवसर हैं। यदि आप पहले से ही किसी संस्थान में शिक्षण कार्य कर रहे हैं तो आप इंटरनेशनल बिज़नेस के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता को विकसित कर सकते हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु रुचि रखने वाले युवाओं के लिए आयात-निर्यात और वस्तुओं से जुड़ी मीडिया रिपोर्टिंग तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

(शेष अगले अंक में)

(लेखक सहायक प्रोफेसर (बिजनेस मैनेजमेंट) एवं पाठ्यक्रम समन्वयक (प्रबंध कार्यक्रम), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार-125001 (हरियाणा) हैं। ई-मेल : stiwarigju@rediffmail.com)